VAAGDHARA

वातें
वाग्धारा नी

अक्टूबर, 2024

अंक 53

VAAGDHARA

प्यारे किसान भाइयों बहनों, प्यारे बच्चों, स्वयं सेवक, संगठन पदाधिकारी तथा स्वराज साथीयों जय गुरु !

हमारे क्षेत्र के लिए यह माह महत्वपूर्ण होता है इस माह में त्यौहार के साथ-साथ हमारी खरीफ की फसल निकालने के अलावा नई आने वाली रबी फसल की तैयारीयों का समय भी होत्ता है। हमारी परंपरागत त्यौहारों से जुड़ी हुयी कुछ जिम्मेदारीयां भी होती है जिनमे हमारे पशुओं का श्रृंगार, रमसी और सुंदरता का विशेष ध्यान रखा जाता है साथ ही हमारे मेरिये का भी महत्व है इसी के साथ मेरिये की पूजा करते हैं तब हम हमारे अनाज को भी आंगन में रखते हैं तो हम हमारे भंडारों को, हमारे खेत- खलिहानों का भी रख रखाव करते हैं तो इस माह के लिए मैं सबसे पहले आप सभी को बहुत बहुत शुभकामनाएं देना चाहता हूं।

हमारे लिए कई चीजे ऐसी होती है जिसे हम समझ नहीं पाते कि हम किस प्रकार से इस प्रकृति को सहयोग कर रहे हैं या नहीं कर रहे हैं, अगर हम नियमित खेती भी करते हैं बिना बाहरी निर्भरता के तो भी प्रकृति के संरक्षण में हमारा प्रयास है और हम उसको निरंतर करते आ रहे हैं महत्त्व इस बात का है कि हम कहीं विकास के नाम पर इसे खराब तो नहीं कर देते हैं।

मेरी कुछ साथियों के साथ चर्चा हो रही थी तो मुझे बताया की हांगणी खेती में मक्का की फसल गिरने से तकलीफ हुई, कुछ मक्का की फसल नीचे गिर गई है, परंतु क्या वो देशी मक्का ही गिरता है? क्या हमारा शंकर मक्का नहीं गिरता है? क्या नुकसान उसमें नहीं होता है? और क्या बचा, क्योंकि जब मैंने कई किसानों से पूछा तो सोयाबीन की फसल में भी पैदावार नहीं दिख रही है जबकि खर्चा उसमें ज्यादा हुआ और हमारी देशी तरीके की खेती में खर्चा कम हुआ, तो क्या हमने उस खर्चे का आंकलन किया या नहीं किया, वह भी हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है तो हम केवल मात्र हमारी फसलो के अंदर एक ही आयाम को ना देखें जिसमें की हमें क्या उपज हुई उसको देखने की जगह हमें यह देखना जरूरी है कि हमने खर्चा क्या किया था ।

हमने प्रकृति को कितना नुकसान पहुंचाया था, अगर हमने ऐसी फसल बोई जिसके अंदर बहुत सारी दवाइयां छिड़कनी पड़ती है या हमें यूरिया, डी.ए.पी और ऐसे खाद का उपयोग करना पड़ता है तो वह भी हमारे लिए फायदे का सौदा नहीं हो सकता, इस विषय को भी हमें साथ में सोचना होगा तभी हम हमारी खेती को उस नजरिए से देख पाएंगे।

मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि हम अगर मनरेगा के माध्यम से हमारे बचे हुए दिनों का उपयोग करके हमारे कार्यों को हमारे घर के अंदर हमारे उखड़े के लिए कंपोस्ट पिट का निर्माण करना, खाद का गड्डा खोदना या विशेष रूप से हमारे आदिवासी अंचल में भी हम पेड़ो को जनवरी-फरवरी में लगा सकते हैं जिनसे हमारी एक बहुत अच्छी फसल आती है,अगर हम कर पाए तो भी हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण होगा और वह शायद हमारे क्षेत्र को बदलने में हमको मदद कर सकता है वह फसल बाद में जाकर के जब बरसात आयेगी तब वह पेड़ जल्दी से बड़े होते हैं तो वह भी तैयारी हम कर सकते हैं ।

हम अगर रबी की फसल को बहुत अच्छे से कर पाए और हम जिम्मेदारियां निभा पाए तो हमारे लिए महत्वपूर्ण है की हम केवल मात्र गेंहू या अकेली एक फसल ना करके जितनी भी हमें आवश्यकता है हम ज्यादा से ज्यादा फसले, सब्जियां, तिलहन, दलहन जो भी हम कर पाए वह हमारे लिए महत्वपूर्ण होगा, जिससे की हमारी निर्भरता कम होगी।

हमारे लिए शिक्षा और विकास जिसे हम कहते हैं हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि मार्च में बोर्ड के साथ सभी परीक्षाएं होती है उससे पहले बच्चों की शिक्षा व शाला में निरन्तरता जरूरी है, हम अपने परिवार, फले, गांव और अपने बच्चों की शिक्षा से नियमितता बनाए रखना जरूरी है, जिससे कि बच्चे शिक्षा से दूर ना हो ।

मैं आप सभी से आग्रह करना चाहूंगा कि हमारी इस चर्चा को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचायें और जोड़े यही हमारी पत्रिका की सफलता के उद्देश्यो की पूर्ति करने में मदद करेगा । अंत में पुनः आप सभी को दीपावली त्यौहार और फसलों के लिए शुभकामनाएं ।

जय- गुरू, जय- स्वराज !!!

आपका अपना

जयेश जोशी

आदिवासी संस्कृति में नई फसल का महत्व

आदिवासी संस्कृति में फसल पूजन परम्परा सदियों से चलती आ रही है, आज भी आदिवासी समुदाय अपने रीति-रिवाज के अनुसार इस परम्परा को मानते आ रहे है। आदिवासी संस्कृति में नई फसल का महत्व और पूजन एक गहरी और सदियों पुरानी परंपरा है जो आज भी जीवित है।

इस परंपरा के माध्यम से आदिवासी समुदाय अपने रीति-रिवाजों और मूल्यों को नई पीढ़ी तक पहुंचाते हैं। यह परंपरा न केवल कृषि से जुड़ी है, बल्कि समाज के विभिन्न पहलुओं को भी प्रतिबिंबित करती है। नई फसल को आदिवासी समुदाय में विशेष महत्व दिया जाता है। यह केवल भोजन का स्रोत ही नहीं है, बल्कि समृद्धि, आशीर्वाद और नए जीवन का प्रतीक भी है। नई फसल के आगमन को एक उत्सव के रूप में मनाया जाता है ।

आदिवासी संस्कृति में, फसल की पूजा एक धार्मिक उत्सव भी है, जिसमें नई फसल को देवी-देवताओं के चरणों में अर्पित किया जाता है। यह एक ऐसा अवसर होता है जब परिवार के सभी सदस्य एकत्र होते हैं और अपने पूर्वजों की याद में सामूहिक रूप से पूजा करते हैं। यह परंपरा न केवल फसल की उपासना के लिए है, बल्कि इसमें पूरे समुदाय के एकता, सम्मान, और प्रेम का प्रतीक भी है। आदिवासी समुदाय में फसल पूजन का अनुष्ठान बड़े श्रद्धा भाव से किया जाता है, जिसमें परिवार और गाँव के लोग एकत्र होते हैं। आदिवासी वंश के अनुसार यह परम्परा जीवित है और आदिवासी समुदाय अपनी बहन बेटीयो व गाय बैलो को नई फसल खिलाने के बाद घर परिवार के लोग अपने पूर्वजो कि याद में देवी देवताओं को फसल चढाते है, जिसमे पुरे गाव के लोग इक्कठा होकर मंदिर में जाते है, घी, दूध और नई फसल के साथ भोजन बनाकर खाते है और अगली फसल अच्छी हो ऐसी कामना करते है, साथ ही नई पीढ़ी को इन बातो से अवगत कराने के लिए इस प्रक्रिया में शामिल करते है ताकि नवयुवक रीति-रिवाज को भूले नही । सदियों से पुरानी इस परम्परा का आदान -प्रदान हो सके जिसमे उनके देवी देवताओं का महत्व बना रहे ।

इस परम्परा में बैलो के महत्व को समझा गया है, क्योंकि बैलो की मदद से खेती होती है इसलिए फसल कि पहली उपज बैलो को खिलाते है और बैलो को इस धरती का मालिक माना जाता है, इस पुरानी परम्परा को आदिवासी किसानो ने ही जीवित रखा है क्योंकि बैलो के बिना खेती करना मुश्किल है, अगर बैलो के द्वारा हल से खेती होती है तो फसल कि पैदावार बढ़ती है और मिट्टी कि उर्वरकता कायम रहती है, साथ ही खेत में बीज कि जितनी मात्रा चाहिए उतनी मात्रा में ही बीज कि बुवाई कि जाती है जिसमें किसान को कोई नुकसान नही होता और बीज खर्चो कि भी बचत होती है, इसलिए आदिवासी समुदाय में सबसे पहले नई फसल को बैलो को खिलाते है ।

विशेषकर जब बुवाई कि तैयारी होती है उस वक्त धरती माता कि पूजा कर बैल और किसान को किसान की पत्नी द्वारा तिलक लगाकर नारियल से पूजा कि जाती है, इस कारण बैलो को अपने घर का पहला सदस्य मानते है और नई फसल बैलो को खिलाकर बाद में घर के सब लोग खाते है |

आदिवासी समुदाय में बैलो के साथ- साथ गाय को भी नई फसल खिलाते है क्योंकि गाय को गो माता मानते है, गाय में देवी देवताओं का वास होता है इसलिए गाय कि पूजा भी करते है अगर गाय नही होती तो इस धरती पर बैल नही होते और बैल नही होते तो खेती नही होती और जिस घर में गाय नही होती है उस घर का आगँन सुना होता है इसलिए हर घर में गाय होना जरूरी है व गाय के गोमूत्र से कई प्रकार कि बीमारियाँ हटती है और गोबर खाद मिलता है जो खेती के लिए आवश्यक है, ऐसी इस समुदाय कि धारणा है की जिस प्रकार से हमारी बहन बेटियों से हमारा प्रेम है उतना ही बड़ा प्रेम गाय के प्रति है इसलिए गाय को गो माता मानकर नई फसल खिलाते है ।

आदिवासी समुदाय में सदियों से चलती आ रही पुरानी परम्परा जिसमें बहन बेटियों को नई फसल में पूर्ण रूप से परिवार का हिस्सा मानते हुए इस फसल में सम्मिलित करते हुए विशेष दर्जा दिया गया है, क्योंकि जैसे ही नई फसल पकने के बाद सबसे पहले बहन बेटी को याद किया जाता है, समुदाय में बहन बेटी को दान के रूप में या प्रोत्साहन के रूप में देकर खिलाया जाता है इससे भाई, बहन, बेटी के प्रति आदर और प्रेम को दर्शाया जाता है । जब तक बहन बेटी को नई फसल खिलाते नही तब तक माँ बाप खाते नही, साथ ही बहन बेटी को अपने घर आमंत्रित करके सभी परिवार के सदस्य एक साथ खाना खाते है यही हमारे रीती -रिवाज का प्रतिक है ।

साथ ही सुखी फसल कि सुखड़ी कई वर्षो से आदिवासी समुदाय में यह परम्परा चलती आ रही है, आज भी इस परम्परा और रिवाज को कायम रखा है, इस परम्परा में जब नई फसल पकती है तो इसका कुछ हिस्सा निकालकर बहन बेटीयों को दिया जाता है जिसमे परिवार में सुख शांति बनी रहती है और फसल अच्छी होती है बेटी लक्ष्मी का स्वरूप है ऐसी समुदाय में धारणा है ।

आदिवासी समुदाय में नई पीढ़ी को इस परंपरा से अवगत कराना भी महत्वपूर्ण है। युवा वर्ग को इन रीति-रिवाजों के प्रति जागरूक किया जाता है, ताकि वे इन्हें भविष्य में भी बनाए रख सकें। यह न केवल परंपरा संरक्षण के लिए आवश्यक है, बल्कि यह सामाजिक एकता को भी बढ़ावा देती है। आदिवासी संस्कृति में नई फसल का महत्व और पूजन एक समृद्ध परंपरा है, जो जीवन के विभिन्न पहलुओं को समेटे हुए है। यह परंपरा न केवल कृषि उत्पादन से जुड़ी है, बल्कि यह समुदाय के एकता, प्रेम, और सामाजिक मूल्य को भी दर्शाती है। इस प्रकार की परंपराएँ आदिवासी समाज की पहचान को बनाए रखती हैं और उन्हें अपने सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में मदद करती हैं।

फसल पूजन के माध्यम से, आदिवासी लोग अपने पूर्वजों को याद करते हैं और नई पीढ़ी को भी इस समृद्ध परंपरा से जोड़ते हैं। आदिवासी संस्कृति में नई फसल का महत्व और उससे जुड़ी परंपराएं उनकी जीवन शैली, मूल्यों और विश्वासों का एक अभिन्न अंग हैं। ये परंपराएं न

केवल कृषि से जुड़ी हैं, बल्कि समाज के विभिन्न पहलुओं को भी प्रतिबिंबित करती हैं।

बैलों और गायों के प्रति सम्मान, बहन-बेटियों का आदर, देवी-देवताओं की पूजा, और समुदाय की एकजुटता, ये सभी इन परंपराओं के माध्यम से व्यक्त होते हैं । आदिवासी समुदाय इन्हें संरक्षित करने और आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध है। ये परंपराएं न केवल उनकी संस्कृति का हिस्सा हैं, बल्कि प्रकृति के साथ सद्भाव में रहने और टिकाऊ कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देने का एक माध्यम भी हैं।

अंत में यह कहा जा सकता है कि आदिवासी संस्कृति में नई फसल का महत्व और उससे जुड़ी परंपराएं उनकी पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। ये न केवल उनके अतीत को दर्शाती हैं, बल्कि वर्तमान में उनके जीवन को समृद्ध बनाती हैं और भविष्य के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करती हैं। इन परंपराओं का संरक्षण न केवल आदिवासी समुदाय के लिए, बल्कि पूरे देश की सांस्कृतिक विविधता और समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण है।

जलवायु परिवर्तन और आदिवासी समुदायः स्वास्थ्य, आजीविका, जीवन शैली एवं अन्य पहलुओं पर असर

आज के समय में जलवायु परिवर्तन एक गंभीर चुनौती बनकर उभरा है और इसके दूरगामी प्रभाव पूरी दुनिया में महसूस किए जा रहे हैं। विशेष रूप से, आदिवासी समुदाय जो प्रकृति के करीब रहते हैं और अपनी आजीविका के लिए पर्यावरण पर निर्भर होते हैं, वे इस जलवायु परिवर्तन से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। हालांकि, इसका प्रभाव सभी पर समान रूप से नहीं पड़ रहा है। आदिवासी समुदाय, जो अक्सर प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर होते हैं और पारंपरिक जीवन शैली जीते हैं, जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से विशेष रूप से प्रभावित हो रहे हैं।

जलवायु परिवर्तन आदिवासी समुदाय में स्वास्थ्य, आजीविका और चक्रीय जीवन शैली पर गहरा प्रभाव डाल रहा है। यह न केवल उनके भौतिक अस्तित्व को खतरे में डाल रहा है, बल्कि उनकी सांस्कृतिक पहचान और पारंपरिक ज्ञान प्रणाली को भी प्रभावित कर रहा है। हालांकि, आदिवासी समुदाय अपने चीलेपन और अनुकूलन क्षमता का परिचय दे रहे हैं। और यह भी महत्वपूर्ण है कि जलवायु परिवर्तन से निपटने की राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय रणनीतियों में आदिवासी समुदायों की विशिष्ट जरूरतों और ज्ञान को शामिल किया जाए। उनके पारंपरिक ज्ञान और प्रथाओं को संरक्षित करने के साथ-साथ उन्हें आधुनिक तकनीक और संसाधनों तक पहुंच प्रदान करने की आवश्यकता है। केवल एक समग्र और समावेशी दृष्टिकोण ही सुनिश्चित कर सकता है कि आदिवासी समुदाय न केवल जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से बच सकें, बल्कि इस वैश्विक चुनौती से निपटने में महत्वपूर्ण योगदान भी दे सकें।

- **जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य पर असर** - आदिवासी समुदायों का स्वास्थ्य सीधा उनकी जीवनशैली, प्राकृतिक संसाधनों और स्थानीय वातावरण पर निर्भर होता है। जलवायु परिवर्तन के कारण बदलते मौसम और वातावरण आदिवासी जनजातियों के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा हैं। आदिवासी समुदायों की आजीविका का मुख्य स्रोत खेती होता है, और अनियमित वर्षा के कारण उनकी कृषि आधारित आय पर भी संकट उत्पन्न होता है, जिससे कुपोषण जैसी समस्याएं बढ़ सकती हैं।
- **संक्रामक बीमारियाँ** – मौसम में बदलाव के कारण मलेरिया, डेंगू, और चिकनगुनिया जैसी जलजनित बीमारियों का प्रकोप बढ़ रहा है। उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में तापमान में वृद्धि के साथ-साथ मच्छरों की संख्या बढ़ रही है, जिससे ये बीमारियाँ तेजी से फैल रही हैं। संक्रामक रोगों का बढ़ता प्रकोप हो रहा है ।
  तापमान में वृद्धि, अनियमित वर्षा, और बाढ़-सूखा जैसी स्थितियों ने कई प्रकार की बीमारियों का खतरा बढ़ा दिया है। जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप तापमान में वृद्धि हो रही है, जिससे आदिवासी समुदायों में गर्मी से संबंधित बीमारियों का खतरा बढ़ रहा है। जैसे ही तापमान बढ़ता है, हीट स्ट्रोक, डिहाइड्रेशन (निर्जलीकरण), और हृदय रोगों का खतरा अधिक हो जाता है। आदिवासी क्षेत्रों मं स्वास्थ्य सेवाएं सीमित होने के कारण इन बीमारियों का इलाज जल्दी नहीं हो पाता, जिससे स्थिति और गंभीर हो जाती है। विशेषकर बुजुर्ग और बच्चों पर इसका सबसे अधिक प्रभाव होता है।
  जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षा के पैटर्न में अस्थिरता देखी जा रही है। कहीं पर अत्यधिक वर्षा हो रही है तो कहीं पर सूखा। अनियमित वर्षा के कारण आदिवासी क्षेत्रों में जल स्रोत दूषित हो जाते हैं, जिससे जलजनित रोगों जैसे डायरिया, हैजा और मलेरिया का प्रसार बढ़ जाता है।
- **कुपोषण**- फसल उत्पादन में कमी और खेती की बदलती स्थितियों के कारण आदिवासी क्षेत्रों में कुपोषण का खतरा भी बढ़ा है। जलवायु परिवर्तन के कारण भोजन की उपलब्धता कम हो रही है, जिससे बच्चों और महिलाओं में कुपोषण के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं।
- **मानसिक स्वास्थ्य**- लगातार जलवायु परिवर्तन के कारण उत्पन्न अनिश्चितता और संसाधनों की कमी आदिवासी समुदायों में मानसिक तनाव और चिंता का कारण बन रही है। भूमि, जंगल, और पानी पर आधारित जीवनशैली में अस्थिरता आने से मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।
- **आजीविकापर असर** – आदिवासी समुदाय अपनी आजीविका के लिए जंगल, खेती, और पशुपालन जैसे प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर होते हैं। जलवायु परिवर्तन ने इन संसाधनों की उपलब्धता और उनकी स्थिरता को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। खेती आदिवासी समुदायों की मुख्य आजीविका है, परंतु जलवायु परिवर्तन के कारण समय पर बारिश न होना, सूखा, या अत्यधिक बारिश फसलों को नष्ट कर रही है। इससे आदिवासी किसानों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। फसल उत्पादन में कमी के कारण खाद्य सुरक्षा का भी संकट उत्पन्न हो रहा है। बाढ़ या सूखा जैसी जलवायु घटनाएं आदिवासी समुदायों को दोहरे संकट में डाल रही हैं। बाढ़ के कारण न केवल फसलें नष्ट होती हैं, बल्कि घर और सार्वजनिक संपत्तियां भी बर्बाद होती हैं।
- **वन संसाधनों पर असर** : आदिवासी समुदाय अपने जीवनयापन के लिए वनों पर निर्भर होते हैं। जंगलों से मिलने वाले औषधीय पौधे, लकड़ी, फल और अन्य संसाधन जलवायु परिवर्तन के कारण कम होते जा रहे हैं। जंगलों के घटते क्षेत्रफल और वनस्पति पर इसके नकारात्मक प्रभावों के कारण आदिवासियों की आजीविका पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।
- **चक्रीय जीवनशैली पर असर** – आदिवासी समुदायों की जीवनशैली चक्रीय और प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित होती है। वे प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर जीवन यापन करते हैं। जलवायु परिवर्तन ने इस चक्रीय जीवनशैली को भी चुनौती दी है।
- **प्राकृतिक संसाधनों की कमी** – जलवायु परिवर्तन ने जंगलों, नदियों, और प्राकृतिक संसाधनों की कमी को बढ़ावा दिया है। आदिवासी समुदाय जो इन संसाधनों पर निर्भर रहते हैं, उन्हें अपने दैनिक जीवन में भारी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। लकड़ी, पानी, और औषधीय पौधों की कमी के कारण उनकी जीवनशैली में बदलाव लाने की आवश्यकता उत्पन्न हो रही है।
- **परंपरागत ज्ञान और संस्कृति पर असर** – आदिवासी समुदायों का जीवन केवल संसाधनों पर निर्भर नहीं होता, बल्कि उनके पास प्राकृतिक घटनाओं और संसाधनों के संरक्षण का पारंपरिक ज्ञान भी होता है। जलवायु परिवर्तन के कारण इस पारंपरिक ज्ञान और उनकी सांस्कृतिक धरोहर पर भी खतरा मंडरा रहा है। जब जलवायु और पर्यावरण में अस्थिरता आती है, तो उनके ज्ञान और प्रथाओं का निरंतरता में बने रहना मुश्किल हो जाता है। जलवायु परिवर्तन आदिवासी समुदायों के स्वास्थ्य, आजीविका, और चक्रीय जीवनशैली को गहराई से प्रभावित कर रहा है। उनके पारंपरिक जीवन पर आधारित संरचनाएँ जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों के आगे कमजोर हो रही हैं। यह आवश्यक है कि समाज, सरकार और अन्य संबंधित संगठनों द्वारा मिलकर जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए समन्वित प्रयास किए जाएँ, ताकि आदिवासी समुदायों की धरोहर, संस्कृति, और जीवनशैली संरक्षित रह सके। जलवायु परिवर्तन का आदिवासी समुदायों के स्वास्थ्य पर व्यापक प्रभाव हो रहा है। उनकी जीवनशैली, आजीविका और स्वास्थ्य पर संकट मंडरा रहा है।
- **पोषण की कमी और खाद्य सुरक्षा पर असरः** आदिवासी समुदायों का भोजन उनके स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर होता है। जलवायु परिवर्तन के कारण फसल उत्पादन में कमी और वनस्पति का ह्रास हो रहा है, जिससे आदिवासी समुदायों के सामने खाद्य सुरक्षा की समस्या उत्पन्न हो रही है। प्राकृतिक वनस्पतियों और जड़ी-बूटियों के घटने से पोषण की कमी होने लगती है, खासकर गर्भवती महिलाओं और बच्चों में इसका गहरा असर देखा जाता है। और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव भी पड़ रहा है प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर आदिवासी समुदायों के लिए जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाओं का आर्थिक और सामाजिक प्रभाव भी मानसिक स्वास्थ्य पर गंभीर असर डालता है। बाढ़ या सूखा जैसे घटनाओं से उनके पारंपरिक आजीविका साधनों के खत्म होने की संभावना होती है, जिससे उन्हें तनाव, चिंता और अवसाद जैसी मानसिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। रोजगार और संसाधनों की कमी से परिवारों पर वित्तीय बोझ बढ़ता है, और उनका मानसिक संतुलन बिगड़ सकता है।

जलवायु परिवर्तन और जल संकट पर प्राकृतिक जल स्रोतों का संरक्षण ही एकमात्र समाधान

जल संकट केवल हमारे देश की ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया की समस्या है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, आज दुनिया की 26 प्रतिशत जनसंख्या को स्वच्छ पीने के पानी की कमी का सामना करना पड़ रहा है। इतना ही नहीं, आगामी 27 वर्षों में यानी 2050 तक दुनिया की 1.7 से 2.4 अरब शहरी जनसंख्या को पीने के पानी की कमी का सामना करना पड़ेगा। इसका सबसे अधिक प्रभाव हमारे भारत देश पर पड़ने की संभावना है। इसके अलावा, दुनिया की 46 प्रतिशत जनसंख्या स्वच्छता मानकों से दूर है। इस संदर्भ में, यूनेस्को के महासचिव आंद्रे अंजोले का कहना है कि स्थिति इतनी गंभीर है कि एक मजबूत अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था स्थापित करने की अत्यंत आवश्यकता है, ताकि इस वैश्विक संकट को नियंत्रण में लाया जा सके। वर्ल्ड वॉटर डेवलपमेंट रिपोर्ट 2023 के अनुसार, 2030 तक दुनिया की सभी जनसंख्या को पीने का शुद्ध पानी और स्वच्छता प्रदान करने का लक्ष्य बहुत दूर है। वास्तविकता यह है कि पिछले 40 वर्षों में दुनिया में पानी के उपयोग की दर हर साल एक प्रतिशत बढ़ रही है। दुनिया की बढ़ती जनसंख्या और सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों को देखते हुए, 2050 तक इसी तरह की वृद्धि की उम्मीद है।

एशिया महाद्वीप की बात करें तो, एशिया की लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या विशेषकर उत्तर-पूर्वी चीन, भारत और पाकिस्तान में पीने के पानी की गंभीर समस्या का सामना कर रही है। इस संकट का सामना करने वाली वैश्विक शहरी जनसंख्या 2016 में 933 मिलियन से बढ़कर 2050 तक 1.7 से 2.4 अरब तक पहुंचने की उम्मीद है, जिसका सबसे अधिक प्रभाव भारत पर पड़ेगा। ग्लोबल वॉटर डेवलपमेंट रिपोर्ट के मुख्य संपादक रिचर्ड कैनर के अनुसार, अगर इस अनिश्चितता को दूर नहीं किया गया और जल्दी ही समाधान नहीं खोजा गया, तो इस गंभीर वैश्विक संकट का सामना करना निश्चित रूप से बहुत कठिन होगा। इसलिए, पानी के अपव्यय को रोकना अत्यंत आवश्यक है। जलवायु परिवर्तन के कारण दुनिया में जल सुरक्षा का खतरा बढ़ता जा रहा है, इसमें कोई शक नहीं। इससे दुनिया में 5 अरब लोगों पर यह संकट भयावह रूप ले रहा है।

कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा किए गए अध्ययन में यह पाया गया है कि जलवायु परिवर्तन के बढ़ते प्रभाव के कारण पानी की यह गंभीर स्थिति उत्पन्न हो रही है। इसके कारण पर्यावरणीय खतरों के बारे में लोगों की जानकारी की कमी और जलवायु परिवर्तन तथा जल सुरक्षा में समझ की कमी है। इस अध्ययन में, वैज्ञानिकों ने दुनिया के 142 देशों में शोध किया, जिसमें कम आय वाले 21 देश और मध्य आय वाले 34 देशों को शामिल किया गया है। इसमें शोधकर्ताओं ने 2019 लॉयड्स रजिस्टर फाउंडेशन वर्ल्ड रिस्क सर्वे डेटा का भी उपयोग किया है। वैज्ञानिकों का मानना है कि अगले 20 वर्षों में यह संकट भयावह रूप ले लेगा और पानी का लोगों के लिए गंभीर खतरा बनेगा। शोधकर्ता जोशुआ इनवाल्ड का कहना है कि सबसे बड़ी आवश्यकता है कि पर्यावरणीय समस्याओं को ठोस और प्रासंगिक बनाया जाए तभी कुछ बदलाव अपेक्षित होंगे।

ग्लोबल कमीशन ऑन द इकॉनॉमिक्स ऑफ वॉटर, जो कि दुनिया के विज्ञान, अर्थशास्त्र और नीति निर्धारण के 17 विशेषज्ञों का समूह है, का मानना है कि लगातार बढ़ती गर्मी के कारण अगले दो दशकों में पानी की कमी और खाद्य उत्पादन में कमी होगी, जिससे भारत को भी सामना करना पड़ेगा। 2050 तक खाद्य आपूर्ति में 16 प्रतिशत की कमी और खाद्य असुरक्षित जनसंख्या में 50 प्रतिशत की वृद्धि होगी, जबकि इस दशक के अंत तक दुनिया भर में ताजे पानी की आपूर्ति की मांग 40 प्रतिशत बढ़ेगी। इसके अलावा, चीन और कई एशियाई देश, जो वर्तमान में खाद्य निर्यातक हैं, 2050 तक केवल खाद्य आयातक बन जाएंगे। पानी की उपलब्धता को देखते हुए, हमारे देश में पानी की उपलब्धता 1100 से 1197 अरब घनमीटर है, जो कि 2010 की तुलना में 2050 तक पानी की मांग दोगुनी हो सकती है। वास्तव में, यह सामाजिक और स्वास्थ्य संकट भी है। पिछले 50 वर्षों में बाढ़, सूखा, तूफान और तापमान में अत्यधिक वृद्धि जैसी पानी से संबंधित आपदाओं के कारण दुनिया में लगभग 2 मिलियन लोगों की मौत हो चुकी है।

जलवायु परिवर्तन के कारण उत्पन्न जल संकट के कारण वैश्विक जीडीपी को 2050 तक 6 प्रतिशत का नुकसान झेलना पड़ेगा, ऐसा विश्व बैंक का मानना है। दुनिया की दो अरब जनसंख्या और वैश्विक जनसंख्या के 26 प्रतिशत लोगों को शुद्ध पानी उपलब्ध नहीं है। दुनिया भर में 436 मिलियन बच्चे और भारत में 133.8 मिलियन बच्चों को उनकी दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त पानी नहीं मिल रहा है। युनिसेफ की रिपोर्ट में कहा गया है कि 2050 तक भारत का 40 प्रतिशत पानी समाप्त हो जाएगा।

एशिया की 80 प्रतिशत जनसंख्या विशेष रूप से उत्तर-पूर्वी चीन, पाकिस्तान और भारत इस संकट का सामना कर रही है। इसका सबसे अधिक प्रभाव भारत पर पड़ने की आशंका है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, शुद्ध पीने के पानी की अनुपलब्धता वाली वैश्विक शहरी जनसंख्या 2016 में 933 मिलियन से बढ़कर 2050 तक 1.7 से 2.4 अरब तक पहुंचने की उम्मीद है। ग्लोबल कमीशन ऑन इकॉनॉमिक्स ऑफ वॉटर की रिपोर्ट में कहा गया है कि 2070 तक 70 करोड़ लोगों को पानी की आपदाओं के कारण विस्थापित होना पड़ेगा। दुनिया की दो अरब जनसंख्या को दूषित पानी पीना पड़ रहा है और हर साल लगभग 14 लाख लोग जल से संबंधित बीमारियों के कारण मर जाते हैं। दुनिया के कई विकसित देशों में लोग सीधे नल से स्वच्छ पानी पीने में सक्षम हैं। लेकिन स्वतंत्रता के 78 वर्षों बाद भी हमारे देश में यह संभव नहीं है, यह हमारी बड़ी असफलता है। केंद्र और राज्य सरकारें घर-घर नल द्वारा पीने का पानी देने का दावा करती हैं। आज भी 5 प्रतिशत लोग बोतलबंद पानी खरीदते हैं। जल जीवन मिशन ने 2024 तक हर घर में नल का पानी पहुंचाने का लक्ष्य रखा था। यह अभियान पानी आपूर्ति विभाग और स्थानीय स्वराज्य संस्थाओं की विफलता है, जिसके कारण हर महानगर, शहर में सैकड़ों छोटे-मोटे पानी की बोतल भरने के प्लांट हैं, जो लोगों तक पानी की बोतलें पहुंचाकर उनकी प्यास बुझा रहे हैं। अगर शासन की मंशा है कि सभी को शुद्ध पीने का पानी उपलब्ध हो, तो प्राकृतिक जल स्रोतों पर ध्यान देना होगा। देश के सभी जल स्रोत संकट में हैं, इसे सरकार भी नजरअंदाज नहीं कर सकती। उदासीनता के कारण तालाब, झीलें, जलाशय नष्ट होने की कगार पर हैं। देशभर में कुल 24,24,540 जल स्रोत हैं। इनमें से 97 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में हैं और केवल 2.9 प्रतिशत शहरी क्षेत्रों में हैं। 45.2 प्रतिशत जल स्रोतों की कभी मरम्मत नहीं की गई है। इनमें से 16.3 प्रतिशत जल स्रोत उपयोग में नहीं हैं। देश के हजारों जल स्रोत प्रदूषित हैं। 55.2 प्रतिशत जल स्रोत निजी संपत्ति हैं और 44.5 प्रतिशत जल स्रोत सरकारी नियंत्रण में हैं। देश के जल स्रोतों की स्थिति अत्यंत दयनीय है। कहीं सूखे पड़े हैं और कहीं निर्माण कार्य के कारण उपयोग में नहीं हैं, तो कहीं कचरे से भरे हुए हैं। इनकी खराब स्थिति का सबसे बड़ा कारण यह है कि ये सूख गए हैं, गाद जमा हो गई है और मरम्मत के अभाव में नीचे गिर गए हैं।

प्राकृतिक जल स्रोतों और नदियों, झीलों, कुओं, भूजल जैसे प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक शोषण करने के कारण स्वच्छ पानी की गंभीर समस्या उत्पन्न हो रही है। अगर सभी को शुद्ध पीने का पानी देना है, तो प्राकृतिक जल स्रोतों पर ध्यान देना होगा। वैश्विक जल संसाधन संस्थान के अनुसार, देश को हर साल लगभग तीन हजार अरब घनमीटर पानी की आवश्यकता होती है। जबकि भारत को एक ही वर्ष में 4000 अरब घनमीटर पानी प्राप्त होता है। भारत में केवल आठ प्रतिशत वर्षा के पानी को संचित किया जा सकता है। यदि बरसात के पानी का पूरी तरह से उपयोग किया जाए, तो पानी की समस्या काफी हद तक हल हो सकती है। जलशक्ति अभियान के अनुसार, पिछले 75 वर्षों में देश में पानी की उपलब्धता तेजी से बढ़ी है। 1947 में हमारी प्रति व्यक्ति वार्षिक पानी की उपलब्धता 6042 घनमीटर थी, जो 2021 में घटकर 1486 घनमीटर हो गई है। इसके अलावा, विश्व बैंक के अनुसार, देश के प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन औसतन 150 लीटर पानी की आवश्यकता होती है, लेकिन उनकी त्रुटियों के कारण वे प्रतिदिन 45 लीटर पानी का अपव्यय करते हैं। इस स्थिति में, इस परिस्थिति में, वर्षा जल संचयन, प्राकृतिक जल स्रोतों का संरक्षण, उनका उचित उपयोग और पानी की बर्बादी को रोकना ही इस संकट से मुक्ति पा सकता है।

जलवायु परिवर्तन से लड़ने के लिए पारंपरिक खेती और पोषण की शक्ति को पुनर्जीवित करने की जरूरत

जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम पैटर्न में परिवर्तन, अनियमित वर्षा, लंबे समय तक सूखा, बाढ़ और अत्यधिक तापमान वृद्धि जैसी घटनाएं आम हो गई हैं। इन परिवर्तनों ने प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता को बुरी तरह प्रभावित किया है, जिससे समुदायों के पोषण और जीवनस्तर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। इसके अतिरिक्त, जलवायु परिवर्तन के कारण पर्यावरण की गुणवत्ता भी घट रही है, जिससे वायु और जल प्रदूषण में वृद्धि हो रही है। इसका सीधा असर बच्चों, गर्भवती महिलाओं और माताओं पर दिखाई दे रहा है, जो विभिन्न शारीरिक और मानसिक बीमारियों से जूझ रहे हैं ।

हमारे क्षेत्र में कुपोषण की गंभीर समस्या भी जलवायु परिवर्तन के साथ गहराती जा रही है। इसके प्रमुख कारणों में जलवायु परिवर्तन के अलावा खेती और बागवानी में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग भी शामिल है। ये रसायन न केवल मिट्टी और जल स्रोतों को प्रदूषित करते हैं, बल्कि भोजन की गुणवत्ता को भी प्रभावित करते हैं, जिससे स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार, जलवायु परिवर्तन और कृषि में रसायनों के उपयोग ने आदिवासी समुदायों के स्वास्थ्य, खासकर बच्चों और महिलाओं के पोषण को गहरे संकट में डाल दिया है। इन समस्याओं का समाधान केवल पारंपरिक ज्ञान को पुनर्जीवित करने और जलवायु-अनुकूल कृषि पद्धतियों को अपनाने के माध्यम से ही संभव है ।

जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

फसल उत्पादन में कमी – जलवायु परिवर्तन का सबसे पहला और महत्वपूर्ण असर फसल उत्पादन पर पड़ता है। तापमान में वृद्धि और अनियमित वर्षा ने कृषि उत्पादन को प्रभावित किया है। आदिवासी समुदाय मुख्यतः अपने पारंपरिक अनाज- कुरी, कोदरा,बट्टी,माल,रागी, ज्वार, बाजार, मक्का आदि और फल जैसे देशी पपीता, आम, कच्ची केरी, केला, सहतूत, कटहल, अमरूद, शकरकंद, टिमरू, झाड़ बेर, गुंदे, जामुन और देशी सब्जियां जैसे पालक, मैथी, डिमडी, पुवाड, लुनिया, चन्दलाई, चने की भाजी, किकोड़ा, टीन्डोरी, तुरई, गिलकी, भिन्डी, डीगरा, बथुआ, रतालू, कंद गोला, कोला, कद्दू, लोकी, देशी बेंगन, सेमफली (पापडी), देशी ककड़ी, सहजन की फली, गाजर, मुली, शलगम, अदरक, हल्दी आदि सब्जियों पर निर्भर रहते थे, जो बच्चों के लिए पोषण का प्रमुख स्रोत होते हैं। जब फसलें नहीं होतीं, तो

परिवारों के पास अपने बच्चों को पोषक तत्व प्रदान करने के लिए कम संसाधन बचते हैं। सूखा, बाढ़, और अनियमित मौसम के कारण खेती में लगने वाली लागत बढ़ रही है, लेकिन रसायन युक्त खाद, बीज एवं दवाओं के कारण उत्पादन घट रहा है, परंपरागत (सच्ची खेती) नही होने या इनका वतर्मान में उपयोग नही होने और कई प्रजातियाँ लुप्त हो गई जिसके कारण बच्चों के लिए आवश्यक पोषण मिल पाना मुश्किल हो रहा है।

पोषण में विविधता की कमी – फसल उत्पादन की कमी का सीधा प्रभाव बच्चों के आहार पर पड़ता है। फसलें नष्ट होने या अच्छी तरह या परम्परागत तरीके से न उगा पाने के कारण, पारंपरिक सब्जियाँ और फल कम मात्रा में मिलते हैं या मिलते है तो बाजार से रसायन युक्त जिससे शरीर एवं बच्चों के विकास में बाधक होते है । इससे बच्चों के भोजन में विविधता की कमी हो जाती है, और उन्हें जरूरी पोषण नहीं मिल पाता है , वे केवल कुछ अनाजों और भोजन के विकल्पों पर निर्भर हो जाते हैं, जो उनके संपूर्ण विकास के लिए आवश्यक विटामिन, खनिज, और प्रोटीन प्रदान नहीं कर पाते। जिसके कारण कुपोषण जैसी गंभीर समस्याएं पनप रही है |

खाद्य असुरक्षा – जलवायु परिवर्तन के कारण खाद्य असुरक्षा बढ़ रही है, जो विशेष रूप से आदिवासी समुदायों के बच्चों के लिए गंभीर समस्या है। लगातार हो रही वर्षा की कमी, मिट्टी की उर्वरकता में कमी, और जल संकट की स्थिति ने खाद्य उत्पादन को प्रभावित किया है। इस असुरक्षा का नतीजा यह है कि बच्चों में कुपोषण और भुखमरी की स्थितियाँ तेजी से बढ़ रही हैं। जब परिवारों के पास पर्याप्त भोजन नहीं होता, तो इसका सबसे बुरा असर बच्चों की सेहत पर पड़ता है। जिससे

कई बार बच्चों की शारीरिक स्थिति गंभीर बन जाती है, कई बार मृत्यु तक का सामना करना पड़ जाता है |

बीमारियों का बढ़ना – गर्मी और आर्द्रता में वृद्धि के साथ मच्छरों और अन्य कीटों से होने वाली बीमारियों, जैसे कि मलेरिया, डेंगू, और जलजनित रोगों का प्रकोप बढ़ जाता है। कमजोर पोषण से ग्रस्त बच्चे इन बीमारियों का जल्दी शिकार हो जाते हैं। बच्चों की प्रतिरोधक क्षमता पहले से ही कम होती है, और जब उन्हें पर्याप्त परम्परागत देशी फल, सब्जियां और मोटा अनाज नही मिलने से पोषण नहीं मिलता है, तो बीमारियों से लड़ने का क्षमता और घट जाती है। बीमारियों का सीधा प्रभाव उनकी वृद्धि और विकास पर पड़ता है।

पारंपरिक खाद्य स्रोतों पर असर – आदिवासी समुदायों के पारंपरिक खाद्य स्रोत जैसे जंगली फल, कंद, जड़ी-बूटियाँ और औषधीय पौधे भी जलवायु परिवर्तन के कारण प्रभावित हो रहे हैं। ये प्राकृतिक संसाधन बच्चों के पोषण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होते थे। लेकिन इनका उपयोग नही होने या लुप्त हो जाने से स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है | जलवायु परिवर्तन के कारण जंगलों और प्राकृतिक वातावरण पर दबाव बढ़ता है, तो इन खाद्य स्रोतों की उपलब्धता कम हो जाती है, जिससे बच्चों को आवश्यक पोषण नहीं मिल पाता है ।

निराकरण के उपायः-

पोषण बगीयां की स्थापना – आदिवासी समुदायों में पोषण बगीयां की स्थापना एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। इनमें पारंपरिक देशी खाद, बीज, दवाओं के उपयोग से कृषि करना और स्थानीय सब्जियों, फलों, और जड़ी-बूटियों की खेती की जा सकती है। इससे

समुदायों को ताजे और पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य सामग्री प्राप्त होगी, जिससे बच्चों को संतुलित आहार मिल सकेगा। इसके अलावा, ये पोषण बगियाँ जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से लड़ने में समुदायों को आत्मनिर्भर बना सकते हैं। हमें संकल्पित होकर पोषण बगियाँ घर- घर लगानी होगी ताकि जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से लड़ते हुए बच्चों एवं स्वयं का पोषण सुनिश्चित किया जा सके |

स्थानीय अनाजों और फसलों का संरक्षण – पारंपरिक अनाजो और फसलों को बढ़ावा देना जिसमे देशी खाद और बीजों के उपयोग के साथ जैसे कुरी, कोदरा, बट्टी, माल, रागी, ज्वार, बाजार, मक्का और अन्य स्थानीय अनाज जलवायु अनुकूल होते हैं और कठोर परिस्थितियों में भी उगाए जा सकते हैं। इन अनाजों को बढ़ावा देने से न केवल खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित होगी, बल्कि बच्चों के लिए आवश्यक पोषण भी मिल सकेगा। इन फसलों के संरक्षण से आदिवासी समुदायों

की खाद्य पारंपरिकता भी बनी रहेगी।

पोषण शिक्षा सुनिश्चित करना, स्थानीय संगठनों एवं सरकारी तंत्र द्वारा – माताओं और परिवारों को बच्चों में पोषण के महत्व के बारे में जागरूक करना आवश्यक है। पोषण शिक्षा के माध्यम से सिखाया जाना चाहिए कि कैसे संतुलित और पोषक आहार तैयार करें, भले ही उनके पास सीमित संसाधन हों। यह सुनिश्चित करेगा कि बच्चों को आवश्यक पोषक तत्व मिलें, चाहे जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न समस्याएँ कितनी भी गंभीर क्यों न हों। जिसमे स्थानीय मोटे अनाजों, फल और सब्बिजयों से तैयार किया जा सके | इसके साथ ही परम्परागत खान-पान पर लगातार संवाद करे ताकि पुनः अपनाया जा सके और कुपोषण जैसी गंभीर समस्याओं से निपटा जा सके |

समुदाय आधारित संरक्षण योजनाएं – आदिवासी समुदायों को जलवायु परिवर्तन से लड़ने के लिए जल संसाधनों और वन क्षेत्रों के संरक्षण के महत्व को समझना चाहिए। परम्परागत जल संरक्षण विधियाँ, वन संरक्षण विधियाँ, और प्राकृतिक संसाधनों के स्थायी उपयोग की योजनाओं में सामुदायिक भागीदारी से सुनिश्चित कर, जलवायु परिवर्तन के नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सकता है ।

इससे खाद्य उत्पादन में सुधार होगा और बच्चों के पोषण में सुधार की संभावना बढ़ेगी।

सरकार और गैर-सरकारी संस्थाओं का सहयोग – जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से निपटने के लिए सरकार और गैर-सरकारी संस्थाओं के सहयोग से विशेष योजनाएँ बनाई जानी चाहिए । इसमें खाद्य वितरण योजनाएँ, पोषण कार्यक्रम, और जलवायु अनुकूल परम्परागत कृषि तकनीकों का प्रसार शामिल होना चाहिए। यह सुनिश्चित करेगा कि आदिवासी समुदायों के बच्चों को पर्याप्त पोषण मिले और उनके भविष्य को सुरक्षित बनाया जा सके।

पानी और सिंचाई सुविधाओं का सुधार – आदिवासी क्षेत्रों में सिंचाई सुविधाओं में सुधार करना आवश्यक है ताकि फसल उत्पादन बेहतर हो सके। जलवायु परिवर्तन के कारण उत्पन्न सूखा और जल संकट से निपटने के लिए जल संग्रहण और सिंचाई की नई एवं परम्परागत तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है। इससे फसल उत्पादन में सुधार होगा | इसके साथ ही समय पर परम्परागत सिंचाई से पोषण युक्त गुणवत्ता की फसल का उत्पादन बेहतर होगा और बच्चों को पोषक तत्व मिल सकेंगे।

समुदाय आधारित स्थानीय संगठनों की भूमिका :-

बाल स्वराज समूह की भूमिका -	ग्राम स्वराज समूह की भूमिका –	सक्षम समूह की भूमिका –
बच्चों के अधिकारों की सुरक्षा और उनके कल्याण को सुनिश्चित करने पर केंद्रित है । समूह समुदाय के बच्चों और उनके अभिभावकों को पोषण और स्वास्थ्य के बारे में जागरूक करे,साथ ही विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए पारंपरिक खाद्य पदार्थों की ओर लौटने और बच्चों को पौष्टिक आहार के महत्व को सिखाने के साथ-साथ, कुपोषित बच्चों की पहचान कर उन्हें सही चिकित्सा सेवाओं तक पहुँचाने में मदद करे और बच्चों को पोषण बगीचों में शामिल कर कृषि और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने में भी यह समूह महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है ।	ग्राम स्वराज समूह ग्रामीण समुदायों की सामूहिक शक्ति को बढ़ावा देता है, जो जलवायु परिवर्तन और पोषण समस्याओं से निपटने में अहम भूमिका निभाता है। समूह पूरे गाँव में सामुदायिक जागरूकता बढ़ाकर पारंपरिक और जलवायु-अनुकूल कृषि पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रेरित करे एवं बैठकों में नियमित संवाद करे, ताकि सामुदायिक पोषण बाड़ी और बगीचों की स्थापना के माध्यम से यह सुनिश्चित किया जा सके कि गांव में उपलब्ध पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य सामग्री बच्चों के स्वास्थ्य के लिए उपलब्ध हो। इसके साथ ही समुदाय को जल संरक्षण और सिंचाई सुधार के उपायों को अपनाकर यह समूह फसल उत्पादन बढ़ाने और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के प्रति समय- समय पर जागरुक करे ।	सक्षम समुह समुदायों को सशक्त बनाकर सामाजिक और आर्थिक सुधारों को गति देने की दिशा में लगातार संवाद करे, जिसमें महिलाओं को आत्मनिर्भर और सशक्तिकरण के प्रति सशक्त बनाए और समूह की माताओं को पारंपरिक खान-पान और पोषण की जानकारी नियमित प्रदान करे, जिससे वे जलवायु परिवर्तन के बावजूद अपने बच्चों के लिए संतुलित आहार सुनिश्चित कर सकें। इसके अतिरिक्त, स्थानीय खाद्य उत्पादन को बढ़ावा देकर, समूह के सभी सदस्य प्राकृतिक और जैविक खाद्य सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित करने की दिशा में समुदाय के साथ संवाद करे, जिससे बच्चों को पौष्टिक और रसायन-मुक्त आहार मिल सके। साथ ही, सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों के माध्यम से जलवायु परिवर्तन के कारण उत्पन्न स्वास्थ्य समस्याओं पर जागरूकता के लिए समूह की बैठकों में संवाद करे, जिससे बच्चों की नियमित स्वास्थ्य जांच और पोषण स्तर की निगरानी हो सके।

विशेष – जलवायु परिवर्तन एक वास्तविक और गंभीर चुनौती है, जिसका प्रभाव विशेष रूप से आदिवासी समुदायों के बच्चों पर पड़ रहा है। फसल उत्पादन की कमी, पोषण में विविधता की कमी, खाद्य असुरक्षा, और पारंपरिक खाद्य स्रोतों की घटती उपलब्धता ने बच्चों के पोषण की स्थिति को और भी संवेदनशील बना दिया है। परंतु निवारण के रूप में पोषण बगीचों/पोषण बाड़ी की स्थापना, पारंपरिक अनाजों का संरक्षण, पोषण शिक्षा, और सामुदायिक संरक्षण योजनाएँ इस चुनौती का सामना करने में कारगर हो सकती हैं। साथ ही, सरकार और गैर-सरकारी संगठनों एवं स्थानीय संगठन ग्राम स्वराज समूह, बाल स्वराज समूह, सक्षम समूह एवं कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन का सहयोग भी इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यदि इन उपायों को सही तरीके से लागू किया जाए, तो आदिवासी समुदायों के बच्चों का भविष्य सुरक्षित हो सकता है, और वे जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से बच सकते हैं।

कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन सहयोग इकाई की गतिविधियां

सामूहिक प्रयासों से बदली तस्वीर - तालाब भरा लबालब

आज हम बात करने जा रहे हैं आदिवासी अंचल के झिकली ग्राम पंचायत के झिकली गांव की जो कुशलगढ़ -ब्लॉक के बांसवाड़ा जिले में स्थित है, इस गाँव की दुरी बांसवाड़ा जिले से 45 किलोमीटर है | गांव की बात करें तो यहां के अधिकतर लोगों की आजीविका खेती पर ही निर्भर है और यही आजीविका का एक मात्र जरिया है |

झिकली गांव में पंचायत भवन के पास वर्षो पुराना बहुत बड़ा तालाब है, इस तालाब से 10 वर्ष पूर्व सिंचाई होती थी | तालाब के पानी से नहर चलने से आस-पास के 2 से 3 गाँवो में सिंचाई होती थी, बाद में पास ही नदी पर लिफ्ट बनाने से दुसरे गाँव में नहरे

बंद कर दी गई और तालाब पर लोगो का ध्यान कम हो गया | नहर रख -रखाव के अभाव में टूट गई और तालाब से सिंचाई बंद हो गई , लेकिन पिछले तीन सालों से तालाब की पाल में तथा कोठी में छेद होने के कारण इस तालाब में पानी का रिसाव होने लगा था | जिसकी वजह से बरसात का पानी पूरी तरह निकल जाता | ग्रामीण तथा ग्राम पंचायत कोई भी इस समस्या की ओर ध्यान नहीं दे रहे थे , जिससे रबी और जायद की फसल का क्षेत्रफल दिनों दिन कम होता जा रहा था | निजी कुओं में पानी गर्मी में पूरी तरह सुख जाने से लोगो का पलायन दिनोंदिन बढ़ रहा था | इस समस्या को स्थानीय स्वयं सेवक देव जी डामोर द्वारा ग्राम स्वराज समूह में बताया गया तथा इसका समाधान मिलकर करने की योजना बनाई , देव जी ने ग्राम स्वराज समूह के माध्यम से ग्राम पंचायत को लिखित में आग्रह पत्र दिया और समस्या के बारे में बताया, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई | इसके बाद ग्राम स्वराज समूह द्वारा कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन टिमेंड़ा बड़ा की मासिक बैठक के दौरान इस समस्या अवगत कराया गया | कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन और ग्राम स्वराज के समूह ने लगातार सरपंच और वहां के सचिव से समय-समय पर इस समस्या के बारे में अवगत करवाते हुए समाधान पर सवांद करते , लेकिन फिर भी कोई समस्या का समाधान नहीं हुआ इसके पश्चात यहां के जलदूत एवं जल स्वराज साथी ने भी इस समस्या को संज्ञान में लेते हुए ग्राम पंचायत झिकली सरपंच, सचिव एवं सभी वार्ड पंचों के साथ मिलकर संगठन सदस्यों के माध्यम से लिखित में ज्ञापन एवं प्रस्ताव दिया गया | पंचायत समिति कुशलगढ़ विकास अधिकारी के साथ इस परेशानी को साझा किया गया | विकास अधिकारी ने इस पर कार्यवाही करते हुए ग्राम विकास अधिकारी एवं सरपच से बात कर इसकी मरम्मत हेतु प्रस्ताव भिजवाने को कहा गया और प्रस्ताव जाने के बाद इसकी मरम्मत हेतु कार्य स्वीकार हुआ और स्वीकृती निकाली गई | तुरंत

तालाब में जहाँ से सिपेज हो रहा था उसकी मरम्मत तो कर दी गई लेकिन वहां पर पत्थर की बन्डिंग करना बाकी रह गया था |

इधर इस कार्य को करते -करते जून 2024 का माह पूर्ण हो गया और ऊपर से बारिश आने का समय तो ग्राम स्वराज एवं स्वराज संगठन सदस्यों ने निर्णय लिया की तालाब हमारा है, पानी भी हमें मिलेगा और फसल भी हमारी पकेगी तो क्यों हम सरकार के भरोसे रहकर इस कार्य का इंतजार करें, तब तक बारिश आ जाएगी तो सब प्रयास बेकार हो जायेंगे , ग्राम स्वराज और स्वराज संगठन सदस्यों ने मिलकर लगभग 50 से 60 ने हलमा के माध्यम से तालाब की पाल पर पत्थर बडिंग कर दी और तालाब की सीपेज को दोबारा होने से रोका गया | वर्तमान की स्थिति में तालाब में एक बूंद पानी भी सीपेज नहीं हो रहा है | इस तरह सयुक्त प्रयासों से सफलता मिली | इस तरह यह कहानी झीकली ग्राम के ग्राम स्वराज समूह और कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन के साझा प्रयास से पानी की समस्या का समाधान हुआ |

जैविक खेती और पशु धन प्रबंधन से खुशहाल हुआ मटू देवी का जीवन

सामान्य जानकारीः- नाममटू देवी बामनिया उम्र 45 वर्ष मटु देवी गाँव चोकड़ी, पंचायत- बड़ी पडाल, जिला बांसवाडा की रहने वाली है | मटू देवी के तीन बच्चे है 2 लड़कियाँ , 1 लड़का और तीनो बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे है | पशुधन में 2 गाय, 1 बैल, 1 भैस है, कृषि कार्य के लिए 3 बीघा भूमि है ।

पूर्व की स्थितिः- मटू देवी स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों को सही से उपयोग नही ले पा रही थी, घर की परिस्थितियों से परेशान थी जिसमे जमींन ,पशुधन, बीज, पोषण बाड़ी और पानी की समझ होने के बावजूद भी इनका सुचारू रूप से प्रबंधन नही कर पाने से के साथ ही एक दुसरे से जोड़ने में जूझ रही थी एवं पर्याप्त संसाधान होने के बाद भी पर्याप्त उत्पादन नहीं ले पा रही थी ।

शुरुआतः- वाग्धारा संस्थान को विगत 2 दशक से मटू देवी जानती थी, संस्था परम्परागत खेती को बढावा देने के लिए कार्यरत है। इस क्रम में वाग्धारा द्वारा पहली बार ग्राम स्तर पर 2018 में सक्षम समूह का गठन किया गया, जिसमे सदस्य के रूप में शामिल हुई, जिससे उन्हें पारंपरिक खेती की जानकारी मिलती रही और पारंपरिक खेती के महत्त्व को समझ पाई, अपनी इस समझ को तो मतु देवी ने खेत पर पहले मिर्ची, प्याज़, लहसुन भिन्डी बेगन टमाटर, ग्वार, तुरई उगाने के बाद समय पर इनका उत्पादन लेना शुरू किया, मौसम अनुसार प्रतिदिन आस-पास के गाँव में जाकर 300 से 400 रूपये की सब्जियाँ बेचना शुरू किया और साथ ही 40 किलो हल्दी तैयार करके 300 रूपये प्रति किलो के हिसाब से घाटोल में बेची, इस तरह सब्जियों एवं हल्दी से 12000 हजार रूपये की आमदनी हुई, इसके साथ ही मतुदेवी के पास पशुधन में 2 गाय 1 भैस से घी तैयार कर हर माह बाज़ार में 1000 रूपये प्रति किलो के हिसाब से 10 किलो घी बेचकर 10000 हजार रूपये प्रति वर्ष कमा रही है। सब्जी से प्रतिवर्ष 30000 से 40000 हजार रूपये कमा लेती है और अपने घर के पास ही 100 बड़े व 150 छोटे पपीता के और 70 चंदन के पौधों की नर्सरी कर रखी है और आगे इनका सपना है कि एक बड़ी नर्सरी का निर्माण करू।

परिवार में बदलाव :- बीज प्रबंधन,पोषण बाड़ी, पशुधन और पारंपरिक खेती के माध्यम से परिवार में सभी सदस्यों का स्वास्थ्य में सुधार होने के साथ ही आमदनी में भी बढ़ोतरी हुई। पहले रासायनिक खाद और दवाई पर पैसा खर्च होता था, अब स्वयं वर्मी बेड में तैयार जैविक खाद का उपयोग अपने बगीचे के साथ

ही खेतो में लेती है, खाद के साथ ही, देशी दवाई का उपयोग करने से बचतहोने लगी, बाज़ार से निर्भरता ना के बराबर हो गयी, इन सबसे परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ। जिससे वह अपने परिवार का दैनिक खर्च और अपने बच्चो की पढाई का खर्च खेत और पशुधन से करती है। और अपने बच्चो को अच्छी शिक्षा दिलवा रही है।

उनके पति रामलाल के साथ साझा किया वे भी पूरी तरह से सहमत हो गये। रामलाल संस्था से नियमित रूप से जुड़ गये और हर माह वाते पत्रिका से नई-नई जानकारी मिलने से आत्मविश्वास बढ़ने लगा, इसी तरह मटू देवी ने सक्षम समूह की बैठकों के माध्यम से मौसम के अनुसार पशु प्रबंधन, फसल चक्र, बीज उपचार, पोषण वाड़ी, मिटटी की महत्ता, जल प्रबंधन को सिखा और अपनाया, इनकी खेती में लगन व मेहनत के साथ ही कुशल हुनर देखते हुए संस्था द्वारा 2021 में देसी खाद को बढ़ावा देने के लिए वर्मी बेड प्रदान किया। सभी घटकों पर समझ बढ़ने के साथ ही मतु देवी के घर की आमदनी में बढ़ोतरी होने लगी। अब यह अन्य महिलाओं को भी बीज प्रबंधन, पशुपालन ,मिटटी की महत्ता और पोषण बाड़ी लगाने की सलाह देती है एवं पारंपरिक खेती करने के लिए प्रेरित करती रहती है।

व्यक्तिगत विकास :- पोषण वाड़ी में पर्याप्त सब्जियां मिलने के बाद मटू देवी को लगा मैं यह कार्य बड़े स्तर पर भी कर सकती हूँ

मटू देवी का सन्देश :- मैंने सोचा नहीं था कि इस मुकाम तक पहुँच बना पाऊंगी, मैने सक्षम समूह की बैठक में भाग लेना शुरू किया और हर बैठक मैं नया सिखती रही इसी बीच "पारंपरिक खेती" से जुड़ने का एक और अवसर मिला, आज जो भी है,वो आपके सामने है। गाँव एवं आस-पास के क्षेत्र में समुदाय को यही बताती हूँ किस भी पारंपरिक खेती को अपनाये जिसमे घर- घर में पोषणवाड़ी, पशु प्रबंधन, बीज प्रबंधन, मिटटी की महत्ता को समझे और अच्छे से प्रबंधन करे अपने खेत में देसी खाद का ही उपयोग करे और बचत के साथ ही स्वास्थ्य लाभ भी लेवे।

गोपाल क्रेडिट कार्ड योजना

गोपालक परिवारों के लिये किसान क्रेडिट कार्ड की तर्ज पर शुरु की गई गोपाल क्रेडिट कार्ड योजना की क्रियान्विति के लिए राज्यभर में अगले सप्ताह से एक पखवाड़े तक कैम्प लगेंगे। योजना में पात्र गोपालको को एक वर्ष की अवधि के लिए एक लाख रुपये तक का ब्याज मुक्त ऋण मिलेगा। 25 सितम्बर से 9 अक्टूबर तक की अवधि के दौरान ब्लॉक स्तर पर डेयरी समितियों और केन्द्रीय सहकारी बैंक (पैक्स) के संयुक्त कैम्पों में गोपालको से ऑनलाईन आवेदन लिये जाएंगे। राजस्थान सरकार द्वारा गोपाल क्रेडिट कार्ड योजना के अंतर्गत पशुपालकों को एक लाख रुपये का ब्याज मुक्त लोन दिया जा रहा है जिसका समय पर भुगतान करना भी जरूरी है। किसानों को खेती के साथ ही पशुपालन के लिए भी सरकार द्वारा प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसलिए राजस्थान सरकार ने किसानों के लिए गोपाल क्रेडिट कार्ड योजना की शुरुआत की, जिसका इस्तेमाल पशुओं को खरीदने, शेड का निर्माण करने और पशुओं के आहार के लिए किया जा रहा है, राजस्थान को-ऑपरेटिव डेयरी फैडरेशन के अनुसार राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2024-25 के बजट में गोपाल को को डेयरी से संबंधित गतिविधियों जैसे गौ वंश हेतु शैड, खेली का निर्माण तथा दुग्ध, चारा, बांट के उपकरण खरीदने के लिये किसान क्रेडिट कार्ड की तर्ज पर गोपाल क्रेडिट योजना की क्रियान्विति की जा रही है। प्रथम चरण में 5 लाख गोपालक परिवारों को ऋण उपलब्ध कराये जायेंगे और इस योजना पर आगामी वर्ष 150 करोड़ रुपये खर्च होंगे।

गोपालको को ऋण के लिये ऑनलाईन आवेदन हेतु राज्यभर के जिला दुग्ध संघों को पैक्स बैंक के साथ मिलकर ब्लॉक स्तर पर कैम्प आयोजित करने के निर्देश जारी कर दिये गये हैं। एक गोपालक परिवार से एक सदस्य जो कि सहकारी डेयरी समिति को दूध का बेचान करता हो, वे प्राथमिक दुग्ध समिति की अनुशंषा पर ऋण प्राप्त कर सकता है। गोपाल क्रेडिट कार्ड योजना के अन्तर्गत ऋण हेतु गोपालक से कोई प्रोसेसिंग शुल्क नहीं लिया जावेगा।

राजस्थान सरकार द्वारा गोपाल क्रेडिट कार्ड योजना के अंतर्गत पशु पालकों को एक लाख रुपये का ब्याज मुक्त लोन दिया जा रहा है. जिसका समय पर भुगतान करना भी जरूरी है.

आवेदन

पशु पालक इस योजना में ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं, जिसके लिए सरकार द्वारा पोर्टल लॉन्च किया गया है, जिसके माध्यम से पशुपालन ब्याज मुक्त लोन पाने के लिए आवेदन कर सकते हैं। यह अल्पकालीन लोन होगा। जिसका भुगतान एक साल के अंदर करना ही होगा। तय समय में यदि किसान ऋण का भुगतान कर देते हैं तोउन्हें ब्याज का भुगतान नहीं करना पड़ेगा। लेकिन जो किसान एक साल के अंदर लोन का भुगतान नहीं कर पाएंगे उन्हें ब्याज देना पड़ेगा।

गोपाल क्रेडिट कार्ड योजना के लिए आवश्यक

- **आधार कार्ड,**
- **पैन कार्ड,**
- **निवास प्रमाण पत्र,**
- **जाति प्रमाण पत्र,**
- **आय प्रमाण-पत्र,**
- **आयु प्रमाण-पत्र,**
- **बैंक खाते का विवरण,**
- **पासपोर्ट साइज फोटो,**
- **आधार से लिंक मोबाइल नंबर**

गोपाल क्रेडिट कार्ड योजना के लिए पात्रता

- इस योजना का लाभ केवल राजस्थान राज्य के किसानों को ही मिलेगा।
- किसानों का प्राथमिक दुग्ध सहकारी समिति का सदस्य होना चाहिए।
- किसान पशुपालन करता हो।

गोपाल क्रेडिट कार्ड योजना कैसे करें ऑनलाइन आवेदन

किसान चाहे तो ऑनलाइन इस योजना के अंतर्गत आवेदन कर सकते हैं. इसके अलावा किसान ई-मित्र केन्द्र के जरिये या ग्राम सेवा सहकारी समिति के माध्यम से आवेदन कर सकते.राज्य सरकार का उद्देश्य है कि ज्यादा से ज्यादा पशुपालक इस योजना का लाभ ले सके. योजना के बारे में जानकारी देने के लिए सरकार द्वारा शिविरों का भी आयोजन किया जा रहा है |

मुर्गी पालन से बढाई आजीविका

परिचय :

नाम :- नानूलाल

पिता -थाना कटारा

गाव :- रुपाखेडा ,

ग्राम पंचायतः- अमारीया पाड़ा

परिवार में सदस्य - 6 2 पुरूष, 3 महिला, 1 बालिका

परिवार में पशुओं की संख्या :- 18 बकरी, 56 मुर्गी, 2 भैस, 2 गाय है |

जमीन की जानकारी :- 5 बीघा, 2 बीघा तलाई वाली , 2 बीघा समतल ,1 बीघा ढलान युक्त |

आज में पोषण वाडी से प्रतिदिन 300 से 400 रूपये प्रतिदिन आमदनी हो रही है प्रति 1.5 माह में मुर्गिया बेचकर भी आय प्राप्त होती है

परिवार की स्थिती : मैं नानूलाल पहले परिवार का पालन-पोषण करने के लिए गुजरात पलायन करता था, बरसात के समय कुछ दिनों के लिए गाँव आकर खेती भी करता था, लेकिन जितना उत्पादन होता था उससे ज्यादा बीज और खाद में पैसा लग जाता था | कुछ समझ नहीं आ रहा था की किस प्रकार अपनी आमदनी को बढाये , इसके लिए में गुजरात पलायन करने लगा वहाँ पर भी मजदूरी बहुत कम थी जिससे सिर्फ गुजारा हो रहा था, लेकिन परिवार की आर्थिक स्थिती में कोई सुधार नहीं हो रहा था | इस तरह मैं अपने परिवार की आजीविका को लेकर दिनोंदिन परेशान होने लगा था | आजीविका बढ़ाने के लिए मुझे कोई रास्ता नजर नही आ रहा था | पुरे दिन परिवार से दूर रहता तो काम में मन नही लगता और विकट परिस्थितियों में परिवार का सहयोग भी नही कर पा रहा था , इस तरह चारो ओर निराशा छाने लगी थी और अपनी किस्मत को कोसने लगा |

बदलाव : दिपावली के त्यौहार पर वर्ष 2019 में घर आया हुआ था , तब वाग्धारा संस्था के साथियों द्वारा मेरे गाँव में ग्राम स्वराज समूह का गठन किया जा रहा था , तब मै पहली बार ग्राम स्वराज समूह का सदस्य बना और मासिक बैठको में भागीदारी करने लगा | ग्राम विकास को लेकर नयी -नयी जानकारी मिलने लगी और ग्राम विकास को लेकर गाव के विभिन्न विषयों के साथ जिनमे सामुदायिक जल स्त्रोतों का सरंक्षण, शुद्ध पेयजल, मनरेगा में 100 कार्य दिवस के साथ ही खेत समतलीकरण , मेडबंदी, फलदार पौधों का वितरण आदि विषयों पर ग्राम सभा में जाने लगा और अपनी बात रखने लगा | इस तरह समय - समय पर नई नई जानकारी मिलने से आत्मविश्वास बढ़ाने लगा और 15 अगस्त 2021 की ग्राम सभा में खेत तलाई के लिए ग्राम सभा में प्रस्ताव जमा करवाया दिया , प्रस्ताव स्वीकृत होने के बाद खेत तलाई का कार्य शुरू हुआ |

खेत तलाई बनने के बाद बरसात आने पर तलाई पानी से भर गयी जिससे जो पहले खेतो का पानी बहकर निकल जाता था वो अब जल बचत के रूप में जमा हुआ, जिससे मेरे निजी कुआ में पानी का स्तर बढ़ा, संस्था द्वारा मार्गदर्शन मिलने पर सभी प्रकार की फसल करने लगा, जिसमे फलदार पौधे , सब्जीयां ,औषधियों के पौधे, अनाज, दाल इत्यादि लगाये एवं इसी के साथ पशु पालन भी करने लगा जिसमे मुर्गी ,बकरी ,गाय ,भैस पालन के साथ ही पोषण वाडी करने लगा | संस्था द्वारा मुझे 22 मुर्गी दी गयी और 2 बकरी दी उससे मुझे काफी फायदा होने लगा इस प्रकार वाडी से दिन के 300से 400 रूपये प्रति दिन की आय ले रहा हूँ और पांच से सात माह में मुर्गी से भी 10000 हजार की आमदनी होने लगी है| हर महीने में बीस से पच्चीस हजार कमा लेता हूँ और लड़की को भी अच्छी स्कुल में शिक्षा दिलवा रहा हूँ | परिवार पोषण युक्त भोजन ले रहा है ,मेरा परिवार ख़ुशी से जीव यापन कर रहा है और समुदाय में अच्छी पहचान बना ली है|

मुर्गी पालन

खेत तलाई

हांगड़ी खेती

वाहन चलाते समय हेलमेट उपयोग करने के साथ गाड़ी की स्पीड कम ही रखे... क्योंकि परिवार आपकी प्रतिक्षा में है......

गाँव का विकास और युवा-शक्ति का योगदान

पृष्ठभूमि-

वर्तमान में देश की कुल जनसंख्या का 40% हिस्सा युवा लोगों का है । युवाओं द्वारा आदिवासी संस्कृति और स्थानीय परम्परागत रीति-रिवाजों को अपने परिवेश में बनाए रखना और गाँवों को आधुनिकता से जोड़ने में सहयोग करने के उद्धेश्य से जनजागरूकता और सक्रिय जनसहभागिता द्वारा गांव विकास के लक्ष्य को प्राप्त करना आवश्यक है ताकि गाँव में बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण व रोजगारोन्मुखी शिक्षा को प्राप्त किया जा सके, परम्परागत खेती के अभ्यासों के साथ स्वास्थ्य और पोषण को सुनिश्चित किया जा सके ।

सरकारी योजनाओं और विकास कार्यक्रमों के विषय में पर्याप्त जानकारी के अभाव में समाज में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्वराज स्थापित किये जाने के क्रम में आदिवासी समुदाय से ऊर्जा, उत्साह से सराबोर नवयुवक संगठित होकर जब ग्राम स्तर पर विकास की प्रक्रियाओं से जुड़कर अपनी भागीदारी निभाएंगे तो राज्य और राष्ट्र स्तर पर भी सकारात्मक प्रभाव दृष्टिगत हो सकेंगे ।

युवा भागीदारी और समृद्ध होते स्वराज संकल्पना के साथ आदिवासी **परिवेश के गाँव-**

गाँवों के विकास को गति देने के लिए "गाँव विकास समितियों" का गठन करना। जिसका प्रमुख ध्येय ग्राम सभा और ग्राम पंचायत के साथ सहयोगात्मक समन्वय स्थापित कर गांव के विकास के लिए कार्य करना और गाँवों की स्थानीय समस्याओं पर विचार करने और उनका स्थानीय स्तर पर समाधान खोजने के सफल प्रयास की ओर अग्रसित हो सकें ।

01 पंचायत स्तर पर कार्यान्वित खेलकूद समिति का गठन-

खेलों में जन सहभागिता तय करने और बढ़ाने के उद्धेश्य से यह आवश्यक हो जाता है कि ग्रामीण स्तर पर युवाओं की सक्रिय भागीदारी को सुनिश्चित किया जाए। यह समिति आगे आकर और निरंतर रूप से

खेल कूद गतिविधियों का आयोजन करवाया ताकि गाँव और पंचायत स्तर से प्रतिभावान युवा निकलकर आगे जिला, राज्य और राष्ट्र स्तर पर अपनी योग्यता को दर्ज करवा सके ।

02 ग्रामीण स्वच्छता और स्वयं सेवक के रूप में युवा शक्ति का योगदान-

गाँवों में खुली नाली व्यवस्था गंदे पानी को इधर-उधर फैलाकर और जमा हो जाने से गंदगी और गंदगी से फैलने वाली बीमारियों को जन्म देने के अवसर बनाती है । युवा शक्ति के योगदान से चहुँओर फ़ैली गंदगी और गंदे पानी के ठहराव को रोकने में सहयोग करते हुए गांव में स्वच्छता को बढ़ावा दिया जा सकता है ।

03 विद्यालयों और आंगनवाडी सेवाओं की पहुँच तक का सुगम और बाधा रहित रस्ते से सफर संभव-

गाँवों में खेत, खलिहान और कच्चे रास्तों व पगडंडियों के कारण बच्चों खासकर बालिकाओं का विद्यालय तक पहुँच पाना मुश्किल हो जाता है। बहुत बार ऐसा भी देखा गया है कि जिन राहों से गुजर कर बच्चे और खासकर बालिकाएं विद्यालय आया जाया करते हैं वे खेतों में से होकर गुजरते हैं और फसलों का समय ऐसा दौर होता है जबकि कि ऊँची-ऊँची फसलें उन रास्तों को रोक देती हैं और ऐसे में बालिकाओं में असुरक्षा की भावना उनको विद्यालय जाने से रोक देती हैं ऐसी चीजों से बचाव में गाँव के युवा मिलकर विद्यालयों और आंगनवाडी को गाँव से जोड़ने के लिए सड़क निर्माण में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें तो गाँव के बच्चे, महिलाओं को शिक्षा और स्वास्थ्य की सुविधा से जुड़ाव सुनिश्चित करने में एक बड़ा सहयोग प्राप्त किया जा सकता है ।

04 राष्ट्रीय पर्व और उत्सव दिवस को ग्राम पंचायत स्तर पर मनाने की जिम्मेदारी लिए जाने की आवश्यकता-

देश में राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाये जाने वाले त्यौहार स्वतन्त्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस और गांधी जयन्ती से सभी परिचित हैं । ये पर्व धूमधाम से ग्राम स्तर पर मनाए जा सकें इस हेतु गाँव की युवा शक्ति अपनी भूमिका निभा सकती है विभिन्न तरह की प्रतियोगिताओं का आयोजन करना, सांस्कृतिक कार्यक्रम की तैयारी कर गाँव और समुदाय के सभी लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करते हुए उत्सवों को मनाए जाने से सामूहिकता के बड़े रूप में देखा जा सकता है ।

05 गाँव स्तर पर किशोर-किशोरियों के स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने में बड़ी भूमिका-

किशोर और किशोरियाँ एक ऐसा समूह होता है जिन्हें पोषण, शिक्षा और स्वास्थ्य की दृष्टि से सर्वाधिक देख भाल की आवश्यकता होती है । किशोरावस्था में सही देखभाल और दिशा ना मिलने से ये दिशाहीन होकर अपनी राह से भटक भी सकते हैं । अतः गाँव के युवाओं की एक बड़ी जिम्मेदारी मानी जा सकती है जबकि किशोरावस्था जैसे संवेदनशील दौर में किशोरों के दोस्त और सहयोगी बनकर उनके स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने और दिशाहीन होने से बचा सकें ।

06 गाँव के सार्वजनिक स्थलों को बाल केन्द्रित बनाने के रूप में बड़ी भूमिका-

गाँव में अक्सर देखा जाता है कि सार्वजनिक स्थलों पर खुले आम झुण्ड में बैठकर लोग अपना कीमती समय ऐसे ही बैठकर बर्बाद कर रहे होते हैं । खाली बैठे हुए इन लोगों से संकोच करते गाँव के बच्चे और बालिकाएं वहां पर आने में या वहां से गुजरने में संकोच करते हैं और सहम जाते हैं और इसी वजह से वे लोग खुलकर खेल कूद और घूमना फिरना नहीं कर पाते क्योंकि वे वहां आने में असुरक्षित महसूस करते हैं । ऐसे में गाँव की युवा शक्ति मिलकर इन सार्वजनिक स्थलों को बाल केन्द्रित बनाने में बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। ऐसे सार्वजनिक स्थल जहाँ पर बिजली की व्यवस्था नहीं है ऐसे स्थानों पर बिजली होना सुनिश्चित करवाएं ताकि रात्रि के समय बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों को निकलने में असुविधा और असुरक्षा की भावना का अहसास ना हो ।

07 गाँवों में बच्चों के लिए सुरक्षा और संरक्षण की दृष्टि से स्वस्थ माहौल के निर्माण में आवश्यक भागीदारी-

जिन गाँवों में पलायन की स्थिति बनती है और परिवारों में पुरुष सदस्य जीविकोपार्जन संसाधन जुटाने के क्रम में गाँव से बाहर चले जाते हैं ऐसे परिवारों में पीछे महिलाएं और बच्चों को अकेले ही रहकर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं करनी होती है । गाँव के युवा सदस्यों के कुछ ऐसे समूह बने हुए हो सकते हैं जो कि आपातकालीन स्थितियों या आवश्यकता नुसार ऐसे परिवारों को सहयोग प्रदान कर सकें । इन युवा समूहों के सहयोग से परिवारों को सहयोग मिल सकता है और इनके जीवन के संघर्ष में स्तर तक सहायता मिलने से आसान बनाया जा सकता है ।

08 युवा क्लब/संगठन के माध्यम से गाँव में बुजुर्गों के सानिध्य में चर्चाओं और सांस्कृतिक संध्या का आयोजन करवाना-

गाँव स्तर पर कुछ युवा क्लब और संगठन बनाकर कार्य किये जाने की आवश्यकता है । ये संगठन और क्लब कुछ इस तरह से कार्य कर सकते हैं कि लोकगीत संगीत के कार्यक्रम, नुक्कड़ नाटक, लोक नृत्य का आयोजन, लोक साहित्य, कवि सम्मेलन, कठपुतली खेल पर आधारित सांस्कृतिक संध्याओं का आयोजन करना, और सांस्कृतिक संध्या के माध्यम से गाँव के बुजुर्गों, महिलाओं, बच्चों को एक साझे मंच पर लाना और पारम्परिक प्रथाओं, लोक गीतों और कहानियों के माध्यम से आपसी वार्तालाप का आयोजन करवाना आदि हो सकते हैं । इन कार्यक्रम के आयोजन का आधार सामाजिक

रूप से फ़ैली कुरीतियाँ जैसे- दहेज प्रथा, मृत्युभोज, जेंडर आधारित भेदभाव, स्त्री शिक्षा आदि-इत्यादि । इन सांस्कृतिक संध्याओं के आयोजन का उद्धेश्य साम्प्रदायिक सामंजस्य, सदभावना और शांति का प्रसार करना होता है ताकि गाँव स्तर पर एक स्वस्थ माहौल और एक दूसरे के प्रति मान सम्मान की भावना बनी रह सके ।

09 गाँव स्तर पर सामुदायिक पुस्तकालय खुलवाना- गाँव के युवा समिति सदस्यों द्वारा गाँव स्तर पर प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को नियमित रूप से प्रेरित करना सम्मानित करवाना। शिक्षा के क्षेत्र में जरूरतमंद बच्चों की सहायता करने के क्रम में गाँवों में "सामुदायिक पुस्तकालय खुलवाना" और उनका नियमित संचालन करना।

10 हलमा का आयोजन करना- आदिवासी संस्कृति की पहचान हलमा और पर्यावरण के प्रति जागरूकता का समर्थन करना ताकि पेड़ व पानी का संरक्षण किया जा सके। इसके अंतर्गत वृक्षारोपण, जल संरक्षण अभियान, अतिक्रमण मुक्ति अभियान, स्वच्छता अभियान इत्यादि कार्यक्रम संचालित करना। किसानों को खेती की आधुनिक तकनीकों और सरकारी योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराना ताकि उन्नत खेती के साथ हमारे गांवों में खुशहाली लाई जा सके।

मुख्य हितधारकों की भूमिका :-

समुदाय की भूमिका-	▸ समुदाय के लोगों को अपने समुदाय से इस प्रकार के नव युवक और नव युवतियों को समूह बनाये जाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए । ▸ समुदाय के बुजुर्ग लोगों को इस तरह की शुरुआत अपने-अपने परिवार से आरम्भ किये जाने की आवश्यकता है । अपने परिवार के युवा सदस्यों को प्रेरित करें ताकि वे इस तरह के समूह बनाकर सांस्कृतिक संध्या, आपसी चर्चाओं का आयोजन, खेलकूद की गतिविधियों का आयोजन और गाँव के विकास से जुड़े कार्यों में बढ़चढ़ कर अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सके । ▸ समुदाय के लोग युवा समूहों में भागीदारी निभाने के लिए किसी भी तरह का जेंडर आधारित भेदभाव ना करें और इस तरह की सोच को विकसित करें कि युवा बालक का अगर समूह बनकर कार्य कर रहा है तो युवतियों का समूह भी गाँव के विकास कार्यों से जुड़े और भावी पीढ़ी और बुजुर्गों के बीच में एक मजबूत कड़ी के रूप में उभरकर अपनी भूमिका को सुनिश्चित करें । ▸ समुदाय के लोग सकारात्मकता के साथ इन समूहों के साथ अपनी भागीदारी को सुनिश्चित करें और इनके द्वारा आयोजित किये जाने वाले कार्य क्रमों, गाँव के विकास के लिए निर्वाह किये जाने वाली गतिविधियों में खुलकर भागीदारी निभाएं ।
सरकार की भूमिका-	▸ गाँव स्तर पर तैयार युवा समूहों को ब्लॉक, तहसील, जिले और राज्य स्तर पर आगे बढ़ाएं ताकि ये युवा वर्ग विकास के कार्यों में खुलकर अपनी भागीदारी निभा सकें । ▸ ग्राम स्तर पर आयोजित होने वाली खेल कूद और सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं और कार्यक्रमों को सरकार खुलकर सहयोग करे ताकि संस्कृति को बढ़ावा मिल सके और युवा शक्ति परम्पराओं को बनाये और बचाए रखने में अपनी भागीदारी और कर्तव्यों को समझ सके । ▸ ग्राम स्तर पर विकास के बेहतर कार्यों को किये जाने वाले समूहों को सम्मानित किये जाने के प्रावधान से युवा समूहों को गौरव की प्राप्ति होगी और आगे की प्रक्रियाओं में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने के क्रम में प्रेरित हो सकेंगे ।
परिवार की भूमिका-	▸ परिवार के स्तर पर माता-पिता की भूमिका होती है कि अपने बच्चों की रूचि की पहचान करें और उसे उसी क्षेत्र में आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करें । ▸ बच्चों के साथ रोक टोक ना करें अगर बच्चे खेल कूद, नृत्य संगीत में आगे बढना चाहता है तो उसे उसी तरह की गतिविधियों में ग्राम स्तर पर उपलब्ध मंचों पर भागीदारी निभाने के लिए प्रेरित करें ।

वागड़ क्षेत्र में केला पौध प्रबंधन

केला सबसे लोकप्रिय फलों में से एक हैं, यह फल हमारे वागड़ क्षेत्र की जलवायु के अनुरूप है और पूरे साल फल लगते हैं। केले के पौधे को विभिन्न प्रकार की बीमारियों से बचाना बहुत जरुरी होता है और इसके लिए हमें अन्य पौधों की अपेक्षा अधिक ध्यान रखना चाहिए ।

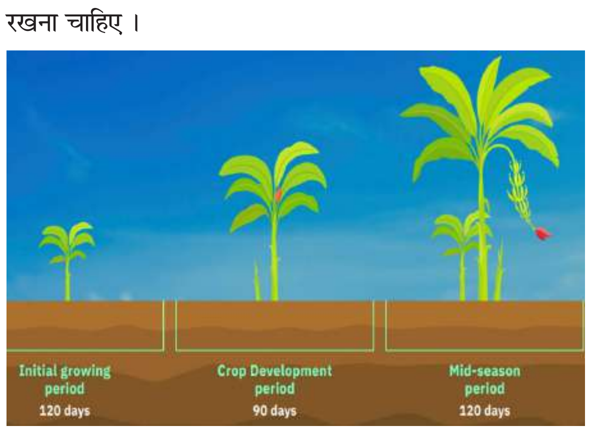

केले के पौधों का बेहतर प्रबंधन करने, पैदावार बढ़ाने, गुणवत्तायुक्त फलों को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित बातों को समझकर स्वयं भी अपनाये एवं समुदाय को भी जागरूक करे हैः-

केले की खेती के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ:

1. **जलवायुः** केले की अच्छी वृद्धि के लिए गर्म और नमी युक्त स्थान उत्तम होता है। केले के भरपूर उत्पादन के लिए 8 घंटे की धुप की आवश्यकता होती है एवं 26°C से 30°C के बीच गर्म तापमान बेहतर होता है। गर्मियों के दौरान, तेज गर्म हवाएँ पत्तियों को फाड़ सकती हैं और उन्हें सूखा सकती हैं।

2. **भूमि का चयनः** ऐसी मिट्टी जो 1.5 से 3 फ़ीट तक गहरी हो और उसमें पर्याप्त मात्रा में गोबर खाद /कार्बनिक पदार्थ हो तथा लम्बे समय तक नमी को बनाये रखती हो वैसी मिट्टी उपयुक्त होती है। यदि मृदा बहुत अधिक क्षारीय या अम्लीय हो तो वहां केले के पौधे नहीं लगाने चाहिए।

3. **केले को कैसे लगायें:** केले के पौधे को विभिन्न तरह से लगाया जा सकता है जिसमे टिशु कल्चर तथा प्रोह से पौध तैयार करना दो प्रचलित विधियाँ है । दोनों विधियों के माध्यम से इस प्रकार पौध लगायेः-

(3.1) संस्था के सहयोग से प्रदाय केले के पौध टिशु कल्चर से तैयार किये गए पौधे है, यह पौधे सामान्य केले के पौधे की अपेक्षा अधिक रोग प्रतिरोधक होते है और उनसे अच्छा उत्पादन प्राप्त होता है।

(3.2) केले की पौध तैयार करने के लिए "केले के पौधे से निकले 'प्रोह' जिन्हें पौधे के आधार से उगने वाले अंकुर या शाखाएँ भी कहते है" का उपयोग किया जाता है इनसे भी बीज की तुलना में बहुत तेज़ी से उपज प्राप्त होती हैं परन्तु इससे तैयार पौधों में विभिन्न बीमारियाँ हो सकती हैं।

4. **केले के पौधे लगाने की दूरी और गहराई:** केले के पौधों को रोपने के लिए 5 गुणा 5 मीटर की दुरी पर पौधे रोपने के लिए गड्ढे तैयार कर ले एवं उसमें उकेडे की खाद एवं उपजाऊ मिट्टी डालकर भर दे फिर इस गड्ढे में पौधा लगाये, इस तरह से पौध लगाने से पौधे की वृद्धि अधिक होती है।

5. **केले के पौधे की देखभाल और रखरखावः** केले के पौधे को पर्याप्त नमी और पोषक तत्व मिलते हैं तब केले की वृद्धि अच्छे से होती है। केले के पौधों की स्वस्थ बढ़वार के लिए नियमित रूप से छंटाई की जानी चाहिए एवं फल लगने पर आवश्यकतानुसार पौधे को सहारा दिया जाना चाहिए।

6. **केले के पौधे की छंटाईः** केले के पौधे की नियमित छंटाई, पौधे की संरचना को नियंत्रित रखने में मदद करती है और पौधों के रखरखाव को आसान बनाती है । मजबूत फसल विकास को प्रोत्साहित करती है, और फलों की उपज को बढ़ाती है। आइए देखें कि कुछ उद्देश्यों के लिए केले के पौधे की छंटाई कैसे करें।

7. **केले के पौधे को सहारा देनाः** केले के पौधे का तना एवं लकड़ी बहुत ही कमजोर होती है जिसे बढ़ने के दौरान सहारा देने की आवश्यकता होती है ताकि यह गिर न जाए। जब पेड़ पर फलों के गुच्छे लगे होते है तब पौधों को सहारा प्रदान करना महत्वपूर्ण हो जाता है।

8. **केले के पौधे में पोषण प्रबंधनः** पौधों की अच्छी बढ़वार और उपज प्राप्त करने के लिए पौधों को संतुलित खाद की आवश्यकता होती है। संतुलित पोषक तत्व मिलने से पौधे की रोग प्रतिरोधक क्षमता और फलों के विकास को बढ़ावा मिलता है। इसलिए 15 से 30 दिन के अन्तराल पर कम्पोस्ट, वर्मी कम्पोस्ट या हड्डी का चूर्ण सिंथेटिक खाद के लिए उपयुक्त विकल्प हैं।

9. **सिंचाई की व्यवस्थाः** मिट्टी में केले के पौध की जड़े सामान्यतः 50 सेमी या 20 इंच लगभग गहरी होती है अर्थात इसकी जड़े उथली होती है । अतः मिट्टी के ऊपरी भाग में पर्याप्त नमी सतत बनायीं रखनी चाहिए । इसलिए केले के पौधों के आस-पास फसल के अवशेष या टूटे हुए पत्तों को मृदा पर बिछाकर मल्चिंग करना चाहिए । जिससे पानी की बचत होती है तो वहीं कम खरपतवार उत्पन्न होती है ।

10. **रोग एवं कीट प्रबंधनः**

10.1 **लू से बचावः** गर्मी के दिनो में लू से बचाव के लिए चारो तरफ बागड़ लगा देना चाहिए यह बागड़, वायु अवरोधक के रूप में कार्य करती है।

10.2 तना छेदक कीटः 4-5 माह की अवधि में केले के पौधे में तना छेदक कीट का प्रकोप की संभावना होता है । शुरूआत में केले की पत्तियाँ पीली पड़ती है फिर चिपचिपा गोंद जैसा पदार्थ निकालना शुरू हो जाता है। वयस्क कीट पर्णवृत के आधार पर दिखाई देते है। ज्यादा प्रकोप होने पर यह कीट तने मे लंबी सुरंग बना देते है। जिसमे सडन के बाद दुर्गन्ध आने लगती है। ऐसे लक्षण दिखाई देने पर रस चुसक कीट के नियंत्रण के लिए निम्नलिखित नीमास्त्र बना कर छिडकाव करना चाहिए । यह छोटी सुंडी इल्लियों के नियंत्रण के लिए भी उपयोगी होता है।

आवश्यक सामग्रीः 5 किलोग्राम नीम की पत्तियां या कोमल टहनियां, 5 किलोग्राम निम्बोली, 5 लीटर गोमूत्र, 1 किलोग्राम गाय का गोबर ।

बनाने की विधिः सर्वप्रथम 5 किलोग्राम नीम की पत्तियों की चटनी और 5 किलोग्राम निम्बोली को पीस व कूट कर एक बर्तन में डालें एवं फिर इस मिश्रण में 5 लीटर गोमूत्र व 1 किलोग्राम गाय का गोबर डालें । इन सभी सामग्री को डंडे से अच्छे से चलाकर जालीदार कपड़े से 48 घंटे के लिए ढक कर रख दें। 48 घंटे बाद यह घोल तैयार हो जाएगा।

अवधि प्रयोगः एक बार नीमास्त्र बनाने के बाद इसका प्रयोग छः माह तक कर सकते है।

सावधानियांः नीमास्त्र को बनाने के बाद इसे धुप में नही रखना चाहिए हमेशा छायादार स्थान पर ही रखे । गोमूत्र मिट्टी के बर्तन में भरकर रखें।

उपयोगः 10 लीटर पानी में तैयार आधा लीटर नीमास्त्र को छान कर मिलाएं और स्प्रे पम्प/ मशीन से पौधों पर छिड़काव करें ।

यांत्रिक उपाय से नियंत्रणः केले की प्रभावित एवं सुखी पत्तियों को काटकर दूर ले जाकर जला देना चाहिए। नयी पत्तियों को समय-समय पर निकालते रहना चाहिए। घड काटने के बाद पौधो को जमीन की सतह से काट कर उनके उपर नीमास्त्र का छिड़काव करना चाहिए, अण्डों एवं वयस्क कीटों को भी नष्ट कर देना चाहिए ।

10.3 पत्ती खाने वाला केटर पिलर (इल्ली): यह कीट नये छोटे पौधों के उपर प्रकोप करता है लार्वा बिना फैली पत्तियों में गोल छेद बनाता है।

यांत्रिक उपाय से नियंत्रणः अण्डों को पत्ती से बाहर निकाल कर नष्ट कर दें ।

नव पतंगों को पकड़ने हेतु एक फेरामोन ट्रेप लगायें।

जैविक उपायः इल्ली से केले के पौधे के बचाव के लिए उपरोक्त दर्शाये अनुसार नीमास्त्र का प्रयोग करे ।

(ii) 50 ग्राम लहसुन, 50 ग्राम तीखी हरी मिर्च लेकर बारीक पीसकर 15 से 20 लीटर पानी में घोलकर केले के पौधे पर छिड़काव करें। इससे इल्ली, रस चूसक कीड़े नियंत्रित होंगे ।

10.4 सिगाटो का लीफ स्पाट (करपा): यह केले में लगने वाली एक प्रमुख बीमारी है इसके प्रकोप से पत्ती के साथ-साथ केले के वजन एवं गुणवत्ता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। शुरू में पत्ती के उपरी सतह पर पीले धब्बे बनना शुरू होते है जो बाद में बड़े भूरे धब्बों में बदल जाते है।

यांत्रिक उपाय से नियंत्रणः पौध लगाने के 4-5 महीने के बाद से ही रोग ग्रसित पत्तियों को लगातार काटकर खेत से बाहर जला दें। यदि पौधे लगाने के स्थान पर जल भराव की स्थिति बनती है तो जल निकास की उचित व्यवस्था करें। खेत को खरपतवार से मुक्त रखें।

जैविक उपायः केले के पौध की जड़ों के चारों ओर गड्ढ़ा खोदकर उसमे 50 ग्राम प्रति ट्राइकोडरमा पाउडर को मिट्टी में सीधे या गोबर/कम्पोस्ट की खाद के साथ मिलाकर डाले।

सावधानियाँः ट्रायकोडर्मा प्राकृतिक उत्पाद है परन्तु इसके प्रयोग के समय मुंह पर कपडा बांधकर उपयोग करे।

10.5 पत्ती गुच्छा रोग (बंची टॉप): यह एक वायरस जनित बीमारी है पत्तियों का आकार बहुत ही छोटा होकर गुच्छे के रूप में परिवर्तित हो जाता है।

यांत्रिक उपायः केले की बीमारी वाली पत्तियों के भाग को काटकर मिट्टी में दबा दें या जला दें।

पारंपरिक उपायः 100 से 150 मिलीलीटर खट्टी छाछ को पानी में घोलकर के पौध पर छिड़काव करने से कीट-प्रकोप को नियंत्रित करने से पौधे का रोग से बचाव होता है ।

10.6 जड़ गलनः इस बीमारी में पौधे की जड़े गल कर सड़ जाती है एवं बरसात एवं तेज हवा के कारण पौधा गिर जाता है।

यांत्रिक उपाय से नियंत्रणः यदि पौधे लगाने के स्थान पर जल भराव की स्थिति बनती है तो जल निकास की उचित व्यवस्था स्थाई रूप से करे ताकि जल भराव की स्थिति उत्पन्न ना हो ।

11. **फल की कटाई एवं भण्डारणः** फल के गुच्छे को धारदार हथियार से काट लेना चाहिए काटने के बाद गुच्छे सहित ठंडे स्थान पर भंडारित करना चाहिए इससे केला के भार व गुणवत्ता अच्छी बनी रहती है ।

12. **केले से बने उत्पादः** केले के कच्चे फल को पतली चिप्स के रूप में काटकर सुखाया जा सकता है एवं इसे तलकर बाद में खाया जा सकता है इसी प्रकार केले की सब्जी भी बना सकते है। केले के पत्ते का प्रयोग भोजन करने के लिए पत्तल के रूप में किया जा सकता है। इन पत्तों को कम मात्रा में पशुओं को चारे के रूप में भी प्रदान कर सकते है। इसके अलावा केले के तने से अच्छे किस्म के रेशे निकालकर साड़ियाँ, बैग एवं रस्सी आदि बनाकर स्थानीय बाजार में बेचकर अतिरिक्त आय प्राप्त की जा सकती है।

13. **केले का पोषण मान एवं स्वास्थ्य पर असरः** केला पोषक तत्वों से भरपूर फल है जिसका सेवन करने से कई स्वास्थ्य लाभ होते हैं। इसमें उपयुक्त मात्रा में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, पोटेशियम एवं प्राकृतिक रेशे होते है जो स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में योगदान करता है ।

- पाचन शक्ति बढ़ाने में सहायक होता है । कब्ज की समस्या में डॉक्टर केला खाने की सलाह देते है।
- केले में प्राकृतिक शर्करा जैसे ग्लूकोज, फ्रुक्टोज और सुक्रोज होता है जो शरीर में ऊर्जा बनाये रखने में मदद करता हैं।
- केले में भरपूर मात्रा में पोटेशियम जो स्वास्थ्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण खनिज है। यह शरीर में स्वस्थ अम्ल-क्षार संतुलन बनाए रखने में मदद करता है।
- केलों में मौजूद विटामिन ए स्वस्थ आंखों को बनाए रखने और अच्छी दृष्टि के लिए आवश्यक है।

वागड़ रेडियो 90.8 FM
वागधारा, कुपड़ा
SCAN ME
अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें-
वागड रेडियो 90.8 FM, मुकाम-पोस्ट कुपड़ा, वागधारा केम्पस, बाँसवाड़ा (राज.) 327001
फोन नम्बर है - 9460051234 ई-मेल आईडी -radio@vaagdhara.org
यह "वातें वागधारा नी" केवल आंतरिक प्रसारण है ।

संकलन एवं सहयोग : जागृती भट्ट, बाबुलाल चौधरी